JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"स्वच्छ पर्यावरण के लिए सार्थक प्रयास: अध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक अवधारणा"

श्रीमती सुधा मिश्रा*
शिक्षिका पोदार इंटरनेशनल स्कूल ,
इंदौर, म. प्र.,
शोधार्थी सेज यूनिवर्सिटी, इंदौर, म. प्र.

सारांश –

प्राचीन काल से ही हमारे धर्मों में वृक्षों की पूजा का महत्त्व रहा है। वैदिक साहित्य में भी इस बात का प्रमाण स्पष्ट रूप से मिलता है। वृक्षों में देवी–देवताओं की उपस्थिति को दर्शाया गया है। सम्पूर्ण सृष्टि में ईश्वर की सर्वव्यापकता को स्पष्ट रूप से परिलक्षित किया गया है और इसका साक्षात प्रमाण हमारे धर्म ग्रन्थ रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद गीता जैसे शास्त्रों के रूप में हमारे पास है। इसे इन पंक्तियों के माध्यम से समझा जा सकता है–

"वनस्पतिं पवमान मध्वा समङ्गिधार्या।

सहस्र वल्शम् हरितं भ्राजमानं हिरण्यं।"

अर्थात् हे सोम देवता! तुम अपनी मधुमयी धारा से इस धरती को सींच दो, जो सहस्र शाखाओं से युक्त है, जो हरी–भरी है तथा स्वर्ण से बनी होने के कारण अत्यंत प्रकाशवान है। इसी प्रकार महाभारत में उल्लेख मिलता है कि–

"एको वृक्षो हियो ग्रामे भवेत् पर्ण फ़लन्वितहः।

चैत्यो भवति निर्ग्य तिरर्च्नियः सुपूजितः।।"

अर्थात् जो वृक्ष पत्तों तथा फ़लों से संपन्न हो, वह पूजनीय है। हमारी भारतीय संस्कृति में प्रकृति तथा प्रकृति प्रदत्त चीजों का बहुत महत्त्व है। प्रकृति की पूजा का भी विधान है। पूजा के समय जो पंचामृत बनाया जाता है, उसमें दूध, दही, घी, चीनी तथा शहद मिलाया जाता है। इसका धार्मिक तथा वैज्ञानिक महत्त्व है। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे धार्मिक ग्रंथों तथा शास्त्रों में प्रकृति, पर्यावरण एवं जीवनोपयोगी जिन नियमों के पालन के लिए कहा गया है, वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी सिद्ध है। विविध व्रत–उपवास एवं नियमों के माध्यम से शरीर को शुद्ध रखना, ये भी इन्हीं में शामिल है। सूर्यग्रहण तथा चंद्रग्रहण को न देखना, मूर्ति स्पर्श न करना तथा ग्रहण काल में भोजन ग्रहण न करना, इसका भी वैज्ञानिक कारण यह है कि इस समय भोजन दूषित हो जाता है। दूषित भोजन शरीर के लिए हानिकारक है। ग्रहण देखना आँखों के लिए हानिकारक हो सकता है। वहीं अध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो ग्रहणकाल में देवता कष्ट में होते हैं। अतः मूर्ति स्पर्श वर्जित है। इसीलिए इसे विविध राशियों से सबंधित करके इसके अनुकूल तथा प्रतिकूल प्रभावों के बारे में बात की जाती है।

नदियों तथा ग्रहों की पूजा आदि धार्मिक क्रियाएँ भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। नदियों को जीवनदायिनी माना गया है। अब तो यह बात वैज्ञानिक दृष्टि से भी सिद्ध हो चुकी है कि पूर्णिमा के चन्द्रमा का प्रकाश तथा सूर्य की कोमल व सुखद रश्मियाँ मनुष्य के लिए मानसिक तथा शारीरिक रूप से लाभकारी हैं। अतः इनके पूजन का विधान है, ताकि कुछ समय मनुष्य इनके संपर्क में आकर अपने शरीर को पुष्ट कर सके। कहने का तात्पर्य यह है कि भारतीय धार्मिक भावनाएँ तथा नियम जितने धार्मिक हैं, उतने ही वैज्ञानिक भी हैं। कोई भी नियम अनावश्यक रूप से नहीं बनाया गया है। अतः इसे वैज्ञानिक रूप से देखना तथा मानना अनिवार्य है।

शब्दावली/संकेत शब्द–

प्रकृति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, जीवनदायिनी, पंचामृत, अनुकूल पूजनीय, प्रकाशवान, सहस्र, सर्वव्यापकता, विचारवान, परिलक्षित, सहेजने, मानसिक, रश्मियाँ, अनुकूल, जलवायु, वृक्षारोपण आदि ।

प्रस्तावना –

प्राचीन काल से ऐसा माना जाता रहा है कि– जो हम सामने वाले को देते हैं वही हमको वापस मिलता है। ये बात केवल हमारे व्यवहार तथा रिश्ते में ही नहीं, अपितु प्रकृति तथा पर्यावरण के साथ किये गए व्यवहार में भी लागू होती है। अतः हम प्रकृति का जितना ध्यान रखेंगे, वह भी हमारा उतना ही ध्यान रखेगी तथा हमें वो सब देगी, जिसके हम अधिकारी हैं। जैसा बारिश करती है, जितना प्यार हम उसे करते हैं वह भी हमें उतना ही प्यार करती है तथा उतने ही प्यार से हमें भिगोती है। बारिश के आने पर ऐसा लगता है, मानो अचानक ही कुछ बहुत अच्छा होने वाला है। बारिश जैसे तपती धूप के बाद एक राहत का अहसास हो, ऐसा लगता है, मानो कुछ बहुत ही खूबसूरत होने वाला है। बारिश जो आकर सब कुछ बदल देगी। बारिश सूखे को हरियाली में बदल देती है और जीने की नई राह दिखाती है।

वैज्ञानिक रूप में यदि हम समझें तो बारिश का आना जलवायु परिवर्तन कहलाता है। इसे अध्यात्मिक दृष्टि से समझें तो यह एक आशा है, अपने आनंद में डूब जाने की और प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं का आनंद लेने की। चातक पक्षी भी वर्ष भर स्वाति नक्षत्र की बूंदों की प्रतीक्षा करता है।

इस प्रकार वर्षा से लेकर मौसम तक, हरी दूब से लेकर अनाज तक, नदियों से लेकर समुद्र तक, पृथ्वी से लेकर सूरज व आकाश तक, प्रकृति का कण–कण हमारे लिए महत्वपूर्ण है। अतः हमें प्रकृति के कण–कण को सहेजने का कार्य करना चाहिए।

ऋग्वेद के अनुसार प्रदूषण को दूर करने के लिए, शुद्ध प्राणवायु प्राप्त करने के लिए तथा जल स्त्रोतों की रक्षा के लिए वृक्षारोपण जरूर करना चाहिए। प्राचीन वैदिक ऋषियों ने प्रकृति में सर्वत्र देवत्व के होने का संकेत किया है। मानव जीवन का प्रकृति के साथ सम्बन्ध को वैदिक ग्रंथों में स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। मनुष्य को प्राणवायु के रूप में ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है, जो कि पेड़ – पौधों से ही प्राप्त होती है। वहीं दूसरी और मनुष्य प्रकृति के लिए एक खाद्य श्रृंखला का निर्माण करता है, जो प्राकृतिक संतुलन के लिए आवश्यक है।

विविध कवियों की कविताओं, लेखकों की कहानियों, उपन्यासों तथा विविध रचनाकारों की रचनाओं में भी प्रकृति के अनेक रूपों का विस्तृत वर्णन मिलता है। हिंदी साहित्य हो या संस्कृत वाङ्मय सबमें प्रकृति के सुन्दर स्वरुप का चित्रण किया गया है। महाकवि कालिदास ने 'अभिज्ञान शाकुंतलम' में प्रकृति के सभी आयामों को जिस प्रकार से सुन्दर तथा सजीव रूप में प्रस्तुत किया है, वह अद्भुत व अनुपम है। 'अभिज्ञान शाकुंतलम' में शकुंतला का पुष्पों से श्रृंगार करना, लताओं को बहन व सखी मानना एवं उनसे बातें करना। जानवरों का एक साथ प्रेमपूर्वक रहना व उनका अहिंसक रूप आदि उदाहरण अद्भुत तथा अविस्मरणीय हैं।

कवियों की कल्पना के लिए कहा भी गया है कि –

'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि ।'

कवियों और कविताओं की बात हो तो महाकवि माखन लाल चतुर्वेदी की महान कविता 'पुष्प की अभिलाषा' को कैसे भूल सकते हैं, महाकवि माखनलाल चतुर्वेदी की रचना 'पुष्प की अभिलाषा' ऐसी ही एक रचना है, जिसमें उन्होंने पुष्प के माध्यम से वीरों की प्रशंसा की है।

चाह नहीं मैं सुरबाला के, गहनों में गूंथा जाऊँ।

चाह नहीं, प्रेमी–माला में, बिंध प्यारी को ललचाऊँ।

चाह नहीं, सम्राटों के शव, पर हे हरि, डाला जाऊँ।

चाह नहीं, देवों के सिर पर, चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।

मुझे तोड़ लेना वनमाली!, उस पथ पर देना तुम फेंक,

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

इसके अतिरिक्त और भी अनेक सुन्दर उदाहरण हैं, जहाँ प्रकृति चित्रण पर कवियों तथा लेखकों ने अपनी कलम चलाई है।

उद्देश्य–

धर्मशास्त्रों में प्रकृति के सभी तत्वों के महत्त्व की विवेचना की गई है। पेड़–पौधों अर्थात् पीपल, तुलसी, नीम, केला, आमला, बरगद, बेल आदि वृक्षों पर जल अर्पित करना आदि धार्मिक मान्यताएँ प्रकृति के संरक्षण तथा महत्त्व की ओर संकेत करती हैं। प्रकृति का कण–कण अध्यात्म से जुड़ा हुआ है तथा समस्त अध्यात्मिक अवधारणाएँ पूर्ण रूप से वैज्ञानिक हैं।

यज्ञ, अनुष्ठान, पूजा–पाठ, जैसे कई सारे मांगलिक कार्यों में दूब का विशेष रूप से इस्तेमाल किया जाता है। किसी भी प्रकार का मांगलिक कार्य दूब के बिना पूरा नहीं माना जाता। आयुर्वेद में दूब, त्रिदोष को हरने वाली (दूर करने वाली) औषधि कही जाती है। धार्मिक महत्व होने के साथ–साथ इसके कई शारीरिक लाभ भी हैं। दूर्वा का आध्यात्मिक महत्त्व भी है, क्योंकि यह गणपति को अति प्रिय है। इससे जुड़ा हुआ एक किस्सा भी है– "धार्मिक मान्यताओं के अनुसार दूर्वा की उत्पत्ति समुद्र मंथन के दौरान हुई थी। यही कारण है कि इसे इतना अधिक पवित्र माना गया है। दूर्वा का इतना धार्मिक महत्व होने के पीछे एक अन्य कथा भी प्रचलित है। इस कथा के अनुसार, जब माता सीता ने सरयू नदी में अपने ससुर राजा दशरथ का श्राद्ध किया था, तब दूर्वा साक्षी बनी थी। तब माता सीता ने दूर्वा को साक्षी बनने पर सदैव हरे–भरे रहने का आशीर्वाद दिया था।

भगवान गणेश को दूब चढ़ाई जाती है। भगवान गणेश के अलावा भगवान शिव, दुर्गा माता, माँ लक्ष्मी और माता सरस्वती समेत कई देवी–देवताओं के पूजन में दूर्वा का उपयोग किया जाता है। ऐसी मान्यता है कि भगवान गणेश की पूजा में 21 दूर्वा चढ़ाने से भगवान गणेश की असीम कृपा प्राप्त होती है।

पृथ्वी, आकाश, जल, वायु तथा सूर्य या अग्नि को पञ्च तत्व माना गया है। साथ–ही–साथ हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार अनेक धर्म ग्रंथों में यह विवरण आता है कि मनुष्य की चौरासी लाख योनियाँ अर्थात् जन्म होते हैं और उनमें से बीस लाख योनियाँ वृक्षों की भी हैं। मनुष्य वृक्षों के रूप में भी जन्म लेता है। धर्म ग्रंथों में एक गीता पाठी ब्राम्हण के माध्यम से बेरियों के मोक्ष प्राप्त करने की कथा का भी उल्लेख मिलता है। इस प्रकार से वृक्षों का महत्त्व मानव जीवन में अकल्पनीय है।

अध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो शाम के समय पेड़–पौधों के फूल–पत्तियों आदि को तोड़ना, पानी देना या उन्हें छूना वर्जित है क्योंकि शाम को वृक्ष सो जाते है और उन्हें छूने से पाप लगता है। इसी बात को अगर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझें तो इस समय पेड़–पौधे कार्बन–डाई–ऑक्साइड छोड़ते हैं और उनके पास जाना हानिकारक हो सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारी प्राचीन धार्मिक मान्यताएँ पूर्ण रूप से वैज्ञानिक हैं।

आज आवश्यकता है कि युवा पीढ़ी को प्रकृति के महत्त्व से अवगत कराया जाए। प्राचीन धार्मिक मान्यताओं तथा विचारधाराओं को अपनाने पर पुनः विचार किया जाए। प्रकृति के बीच शिक्षा देने की व्यवस्था की जाए। बालकों को प्रकृति के निकट बैठाकर उसकी आवश्यकता तथा संरक्षण से अवगत कराया जाए। यही बच्चे आगे देश के नागरिक बनकर प्रकृति के संरक्षण में सहयोग करेंगे तथा प्राकृतिक संरक्षण का महत्त्व समझ सकेंगे। केवल विश्व पर्यावरण दिवस मानना तथा कुछ पेड़–पौधे लगाकर अपना कर्तव्य निभाना ही पर्याप्त नहीं है। प्रकृति के संरक्षण को दैनिक जीवन में अपनाना आवश्यक है, तभी हम आने वाली पीढ़ी को सुन्दर तथा सुखदाई प्रकृति की सौगात दे पाएँगे।

निष्कर्ष–

5 जून 2023 को दैनिक भास्कर समाचार–पत्र में एक छोटा–सा अभियान 'एक पेड़, एक ज़िंदगी' चलाया गया था। इसके तहत पौधों के कुछ बीज समाचार–पत्र के माध्यम से पाठक को भेजे गए थे और पौधा रोपण के लिए प्रोत्साहित किया गया था। साथ–ही–साथ पौधों के साथ पाठक को फोटो भी भेजने को कहा गया था, ताकि पाठक इस अभियान की ओर आकर्षित हो सकें। यह प्रयास सार्थक रहा क्योंकि बहुत सारे पाठकों ने इस अभियान में हिस्सा लिया। माना कि यह अभियान बहुत छोटा– सा था, परन्तु इसके माध्यम से अनेक लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया गया तथा पौधा–रोपण के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस तरह के छोटे–छोटे प्रयासों के माध्यम से बहुत बड़े अभियान को चलाया जा सकता है। इस तरह की पहल आम नागरिकों तथा सरकार द्वारा की जानी चाहिए। कहा भी गया है कि–

"अपने हित से पहले देश हित के बारे में सोचना, विकासशील लोगों का काम है।"

प्राचीनकाल में लोगों की सोच वैज्ञानिक थी। इसे कुछ उदाहरणों के माध्यम से समझा जा सकता है, जैसे– बिना घडी देखे ही सूरज तथा चाँद की परछाईं देखकर समय बताना, मंदिर की घंटी के नाद या ध्वनि को सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत मानना आदि।

मनुष्य जब सतयुग में था, तब उसके क्रियाकलाप तथा विचारधारा पूर्ण रूप से वैज्ञानिक एवं सक्रिय थी। मनुष्य प्रकृति के प्रति सचेत था और उसके विचार सकारात्मक थे। आधुनिक युग में प्रवेश करते–करते मनुष्य वैज्ञानिक युग में जीवन–यापन कर रहा है, परन्तु संकीर्ण विचारधारा के साथ। आज मनुष्य न तो प्रकृति का संरक्षण करना जानता है और न ही सदव्यवहार। अतः मनुष्य को आधुनिक व वैज्ञानिक सोच के साथ विचारवान बनना पड़ेगा, ताकि वह स्वार्थ के परे जाकर प्रकृति तथा आने वाली पीढ़ियों के बारे में सोच सके।

सन्दर्भ सूचि–

[1] (सी. एस. मुखोपाध्याय)

[2] (यादव)

[3] (मकर संक्रांति पर सूर्य की गति बढ़ने से बढ़ती है हमारी ऊर्जा)

[4] (कुमार)

[5] (संवाददाता, जीवों की रक्षा का घोषणा पत्र इंदौर से होगा जारी, देशभर के पर्यावरणविद जुटेंगे)

[6] (दुबे)

[7] (प. ज. सेन, सांसों के साथ औषधि, शांति और ख़ुशी देते पेड़, इसलिए पूजनीय)

[8] (श्रोती)

[9] (कुमारी)

[10] (तिवारी)

[11] (डॉ. सत्येंद्र प्रकाश)

[12] (रघुरामन)

[13] (नुजेंट)

[14] (जावेद)

[15] (जोशी)

[16] (संवाददाता, हरियाली का ३०% हिस्सा शहरी वनों के रूप में तैयार हो)

[17] (सेन)

[18] (प. ज. सेन, हम धर्मस्थलों पर जाते हैं क्योंकि ऊर्जा के केंद्र बिंदुओं पर बनते हैं मंदिर, मिलती है आत्मशांति)

[19] (सिंह)

[20] (त्रिवेदी)

[21] (ड. म. त्रिवेदी)

[22] (भोपालसिंह)

[23] (प्रसून)

[24] (भाटिया)

[25] (चंदोला)

[26] (गुप्त)

[27] (बनवारी)

[28] (दीप्तिशर्मा)

[29] (तुलसीदास)

[30] (ड. म. त्रिवेदी., ಚಟುಣಧಿಚಿಂಜಜು.ಛಿಂಟ)

[31] (व्यास)

[32] (चुघ)

[33] (राजवंशी)

[34] (प्रसाद)

[35] (कालिदास)

[36] (संस्कृतवाङ्ग्मयमेंपर्यावरणीयचिंतनवर्तमानसन्दर्भमें)

[37] (क. शर्मा)

[38] (मणि)

[39] (डॉएसअखिलेश)

[40] (बनवारी, पंचवटी, भारतीयपर्यावरणपरंपरा)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि–

कुमार, जलज. "ऋग्वेदीय आदित्य देवता की वैज्ञानिक विशेषताएँ." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिन्दी रिसर्च (2017): 61,62.

कुमारी, रेखा. "ऋग्वेदीय अग्नि वेदान्तक सूक्तों में प्रतिपादित वैज्ञानिक तथ्य." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिन्दी रिसर्च (2017): 62–65.

जावेद, डॉ सीमा. "एशिया के वाटर टावर से लेकर ग्रेट बैरियर रीफ तक खतरे में है." दैनिक भास्कर (2022): 8.

जिल लेंगलोइस, साओ पालो. "ब्राजील की 91 वर्षीय फोटोग्राफर अमेजन के वर्षा वनों को बचा रहीं." दैनिक भास्कर (2023): 10.

जोशी, डॉ अनिल प्रकाश. "प्रकृति को बचाने के लिए हमें अपनी प्रवृत्ति सुधारनी होगी." दैनिक भास्कर (2022): 8.

डॉ. सत्येंद्र प्रकाश, राघवेंद्र प्रकाश. "समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चिंतन का अनुशीलन." (2017): 112–115.

तिवारी, सुशील कुमार. "केदारनाथ सिंह के काव्य में पर्यावरणीय चिंता." (2016): 9.

दुबे, अभिषेक. "प्रकृति के बीच इंजीनियरिंग की क्लास ,ಖಲಖಚಖಖ ने रिनोवेशन वर्क में 100 साल पुरानीईमारत टूटने से बचाकर उसे बना दिया नेचर क्लब,." दैनिक भास्कर (2022).

नुजेंट, सिआरा. "यूरोप में पर्यावरण की रक्षा के लिए कंस्ट्रक्शन कम करने का अभियान." दैनिक भास्कर (2022): 10.

भास्कर न्यूज, झाबुआ. "८७० करोड़ लीटर वर्षा जल हर साल सहेज रहे, १६० माता–वन में खड़े कर दिए पाँच लाख से अधिक पेड़." दैनिक भास्कर (2023): 9.

यादव, किरण यादव. "महाकवि कालिदास का मानव जीवन एवं प्राकृतिक वर्णन का तुलनात्मक अध्ययन." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिंदी रिसर्च (2017): 1–5.

रघुरामन, एन. "पानी अगला खतरा और अगला अवसर भी." दैनिक भास्कर (2023): 9.

रिसर्च, भास्कर. " एक इलेक्ट्रिक कार बनाने में लगभग ४ हजार किलो घातक कचरा और ९ टन कार्बन पैदा होता है, १३ हजार लीटर पानी भी खर्च होता है." दैनिक भास्कर (3 जुलाई 2022): 1.

श्रोती, वंदना. "प्रदेश का पहला ऐसा पार्क बनेगा एकांत जहाँ बढ़ेगा ऑक्सीजन इंडेक्स और दूर होगा वाटर पॉल्यूशन." दैनिक भास्कर (2022): 5.

संवाददाता, भास्कर. "जीवों की रक्षा का घोषणा पत्र इंदौर से होगा जारी, देशभर के पर्यावरणविद जुटेंगे ." (2022).

—. "ये अच्छा आईडिया है ! आबोहवा सुधारने १०० बगीचे बनाएंगे ." दैनिक भास्कर (2022).

—. "हम सफाई के विश्व गुरु! फ्रांस में दिखाई जाएगी स्वच्छता की तस्वीरें, 7 देशों के 21 सदस्यों ने शहर देखा, बोले– अब प्रदूषण ख़त्म करने पब्लिक ट्रांसपोर्ट अपनाए इंदौर." दैनिक भास्कर (2022): 2.

—. "हरियाली का ३

इंदौर, सिटी रिपोर्टर. "80% अनाज मधुमक्खियों द्वारा किये जाने वाले पोलीनेशन से पैदा होता है." दैनिक भास्कर (2023): 21.

कुमार, जलज. "ऋग्वेदीय आदित्य देवता की वैज्ञानिक विशेषताएँ." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिन्दी रिसर्च (2017): 61,62.

कुमारी, रेखा. "ऋग्वेदीय अग्नि वेदान्तक सूक्तों में प्रतिपादित वैज्ञानिक तथ्य." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिन्दी रिसर्च (2017): 62–65.

जावेद, डॉ सीमा. "एशिया के वाटर टावर से लेकर ग्रेट बैरियर रीफ तक खतरे में है." दैनिक भास्कर (2022): 8.

जिल लेंगलोइस, साओ पालो. "ब्राजील की 91 वर्षीय फोटोग्राफर अमेजन के वर्षा वनों को बचा रहीं." दैनिक भास्कर (2023): 10.

जोशी, डॉ अनिल प्रकाश. "प्रकृति को बचाने के लिए हमें अपनी प्रवृत्ति सुधारनी होगी." दैनिक भास्कर (2022): 8.

डॉ. सत्येंद्र प्रकाश, राघवेंद्र प्रकाश. "समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चिंतन का अनुशीलन." (2017): 112–115.

तिवारी, प्रो श्रुति. " हर साल हो पौधों का ओडिट, अलग से बने मास्टर प्लान, जिम्मेदारी भी तय हो, तभी बचेगा शहर का ग्रीन बेल्ट." दैनिक भास्कर, (2022): 1.

तिवारी, सुशील कुमार. "केदारनाथ सिंह के काव्य में पर्यावरणीय चिंता." (2016): 9.

दुबे, अभिषेक. "प्रकृति के बीच इंजीनियरिंग की क्लास ,ꯑꯁꯑꯑꯑꯑ ने रिनोवेशन वर्क में 100 साल पुरानीईमारत टूटने से बचाकर उसे बना दिया नेचर क्लब,." दैनिक भास्कर (2022).

नुजेंट, सिआरा. "यूरोप में पर्यावरण की रक्षा के लिए कंस्ट्रक्शन कम करने का अभियान." दैनिक भास्कर (2022): 10.

पटनायक, देवदत्त. "लौकिक और दैवीय संसार के बीच एक मध्यस्थ हैं अग्नि देवता." दैनिक भास्कर रसरंग (2023): 20.

भास्कर न्यूज, झाबुआ. "८७० करोड़ लीटर वर्षा जल हर साल सहेज रहे, १६० माता–वन में खड़े कर दिए पाँच लाख से अधिक पेड़." दैनिक भास्कर (2023): 9.

भास्कर न्यूज़, भुज. "गुजरात:कच्छ में हो रही मशरूम में दुर्लभ ऐस्टेटिन , यह कैंसर इलाज में उपयोगी." दैनिक भास्कर (2023): 14.

यादव, किरण यादव. "महाकवि कालिदास का मानव जीवन एवं प्राकृतिक वर्णन का तुलनात्मक अध्ययन." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिंदी रिसर्च (2017): 1–5.

रघुरामन, एन. "पानी अगला खतरा और अगला अवसर भी." दैनिक भास्कर (2023): 9.

रानी, डॉ आशीष. "रोग निदान में मददगार फल." दैनिक भास्कर (2022).

रिसर्च, भास्कर. " एक इलेक्ट्रिक कार बनाने में लगभग ४ हजार किलो घातक कचरा और ९ टन कार्बन पैदा होता है, १३ हजार लीटर पानी भी खर्च होता है." दैनिक भास्कर (3 जुलाई 2022): 1.

लिमिटेड, द इकोनॉमिस्ट ꯀꯒꯐꯑꯂꯂꯅꯑ. "प्रदूषण से भारतियों की आयु सात साल तक काम हुई ; अर्थव्यवस्था की तीन लाख करोड़ रूपए का नुकसान." दैनिक भास्कर (2023): 2.

शर्मा, अनिरुद्ध. "कहाँ गया वसंत ? सर्दी बीतते–बीतते फरवरी में ही तापमान १५ मार्च जैसा." दैनिक भास्कर (2023): 1.

श्रोती, वंदना. "प्रदेश का पहला ऐसा पार्क बनेगा एकांत जहाँ बढ़ेगा ऑक्सीजन इंडेक्स और दूर होगा वाटर पॉल्यूशन." दैनिक भास्कर (2022): 5.

संवाददाता, भास्कर. "जीवों की रक्षा का घोषणा पत्र इंदौर से होगा जारी, देशभर के पर्यावरणविद जुटेंगे ." (2022).

—. "ये अच्छा आईडिया है ! आबोहवा सुधारने १०० बगीचे बनाएंगे ." दैनिक भास्कर (2022).

—. "हम सफाई के विश्व गुरु! फ्रांस में दिखाई जाएगी स्वच्छता की तस्वीरें, 7 देशों के 21 सदस्यों ने शहर देखा, बोले– अब प्रदूषण ख़त्म करने पब्लिक ट्रांसपोर्ट अपनाए इंदौर." दैनिक भास्कर (2022): 2.

—. "हरियाली का ३०% हिस्सा शहरी वनों के रूप में तैयार हो." दैनिक भास्कर (2022).

सिटी रिपोर्टर, इंदौर. "मान्यता है कि गोंड स्त्री गोदना न करायेतो मोक्ष नहीं मिलता." दैनिक भास्कर (2023): 2.

सी. एस. मुखोपाध्याय, पी. एन. द्विवेदी , जे. एस. अरोड़ा, रमणीक वर्मा. "भारत में बढ़ता हुआ जल अभाव :सूखे की दशा से निपटने के लिए कृषि गतिविधियाँ." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिन्दी रिसर्च (2017): 5–8.

सेन, प्रो जॉय. "मकर संक्रांति पर सूर्य की गति बढ़ने से बढ़ती है हमारी ऊर्जा." दैनिक भास्कर (2022): 2.

—. "सांसों के साथ औषधि, शांति और ख़ुशी देते पेड़, इसलिए पूजनीय." दैनिक भास्कर (2022): 2.

सेन, प्रो. जॉय. "ऊर्जा के केंद्र बिंदु पर बनते हैं मंदिर, मिलती है आत्मशांति." दैनिक भास्कर (2022).

—. "हम धर्मस्थलों पर जाते हैं क्योंकि ऊर्जा के केंद्र बिंदुओं पर बनते हैं मंदिर, मिलती है आत्मशांति." दैनिक भास्कर (7 अगस्त 2022): 2.

हैरी, प्रिंस. "आपके पास मौका है लोगों के विचार बदलने का, इसे बेकार न जाने दीजिए." दैनिक भास्कर (2023): 5.